यथार्थ दृष्टिकोण

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

यथार्थ दृष्टिकोण जीवन दिशा को खोलने वाला विषय है। यथार्थ दृष्टिकोण हमारे भीतर वर्तमान आत्मा का शुद्ध दर्शन है। आत्मा शरीर से भिन्न है। यह भेदविज्ञान है। छः द्रव्य समुदाय जहां होता है वह अपने आप गति करता है। मनुष्य करता नहीं है जगत का संचालन करना ईश्वर के हाथ में है। निश्चय दृष्टि से में शुद्ध आत्मा हूं और व्यवहार दृष्टि से नाम संज्ञा वाला हूं। व्यवहार जगत में हम जीते है। हम समाज में रहते हैं, समाज में परस्पर सम्बन्ध रहता है। व्यवहार जगत के शुद्धिकरण से मानव निश्चय जगत में जाता है। आत्मा शुद्ध बुद्ध मुक्त है। सांख्य दर्शन के अनुसार आत्मा शुद्ध है। वह कर्त्ता नहीं है। उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसा हम कार्य करते हैं वैसा प्रभाव आत्मा पर पड़ता है। आत्मा कर्मानुसार विभिन्न गतियों में संचरण करता है। गीता में कहा गया है कि जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्रों को धारण करता है, वैसे ही आत्मा भी पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को धारण करता है। जन्म–मरण का चक्र दुःख का कारण है। आत्मा कर्म के कारण आवृत्त रहता है। कर्म का आवरण हटते ही आत्मा शुद्ध रूप में स्थित हो जाता है। आत्मा का भाव ज्ञाता और दृष्टा का है। वह सच्चिदानन्द है। जगत नियन्ता व्यवस्थित शक्ति है। उसे ईश्वर ब्रह्म सर्वशक्तिमान कहा गया है। जगत निर्दोष सब मेरा दोष। जगत में जितने भी प्राणी हैं, सब निर्दोष हैं। लेन–देन शेष है, जो मैं दे रहा हूं वह कर्जा उतार रहा हूं। यह पूर्वजन्म के कार्य का निपटारा है। टकराव टालिये, सड़क पर चलिये, ट्रेन में यात्रा करिये, यदि थोड़ी सी असावधानी हुई टकराव हुआ। वचन की दृष्टि से यदि वचन ईधर–उधर हुआ टकराव हो जायेगा। भुगते उसकी भूल का अर्थ हैं– मान लीजिए मेरा पैसा किसी ने ले लिया है, मेरी जमीन किसी ने ले ली तो मुझे यह मानना चाहिए कि पहले मैंने उसका लिया था, इसलिये उसने मेरा ले लिया है। यह ईश्वर का न्याय है। इससे मुझे छुटकारा मिल गया। आत्मपरीक्षण, आत्मतुला पर तौलकर जब तक हमारी गलत समझ दूर नहीं होगी तब तक यथार्थ दृष्टिकोण नहीं होगा। विश्व को सुधारने के लिए यथार्थ दृष्टिकोण बनाना होगा। किसी की बुराई को

देखकर दुसरी बुराई करना यथार्थ दृष्टिकोण नहीं है। बुराई में अच्छाई को देखना चाहिए। प्रतिक्रमण से पवित्रीकरण होता है। दोषों के लिए प्रायश्चित होता है। इससे शुद्धीकरण प्रारम्भ हो जाता है।

सादा जीवन उच्च विचार यथार्थ दृष्टिकोण का मूलमंत्र है। यहां के ऋषियों, मुनियों, महर्षियों ने एकान्त में रहकर कन्दमूल फल खाकर नदियों और झरनों का पानी पीकर स्वस्थ तन, मन के द्वारा जो चिन्तन दिया है वह भारतीय साहित्य का आधार स्तम्भ है। महर्षि वेदव्यास, महर्षि वाल्मीकि, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, गोस्वामी तुलसीदास जैसे महापुरुषों ने जो यथार्थ दृष्टिकोण दिया है आज पूरा भारत उसी पर चल रहा है। रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत्, रामचरितमानस, आगम और त्रिपिटक भारतीय साहित्य की धरोहर हैं। इसमें यथार्थ दृष्टिकोंण और उच्च विचारों का प्रतिपादन है। इन महापुरुषों ने राजमहल को त्यागकर साधारण जीवन जीने का निर्णय लिया। इन्होंने संसार के सत्य को खोजा और सामान्य जनता में इसका उपदेश किया। उन्हीं के दिखाये हुए मार्ग पर आज पूरा विश्व चल रहा है। मानव जीवन बड़ा ही अमूल्य है। मानव जीवन को पाकर यदि कोई इसको व्यर्थ में गंवा दे तो उसका जीवन निरर्थक ही रहता है। 'बड़े भाग्य मानुष तन पावा' अर्थात् मनुष्य का शरीर बड़े पुण्य कर्म के पश्चात् ही प्राप्त होता है। मानव जीवन बड़ा ही दुर्लभ है। चौरासी लाख जीवन योनियों में यह सर्वश्रेष्ठ है। मानव एक पंचेन्द्रिय प्राणी है। चेतना का पूर्ण विकास मानव में हुआ है। एक इन्द्रिय वाले जीव, दो इन्द्रिय वाले जीव, तीन इन्द्रिय वाले जीव, चार इन्द्रिय वाले जीव इन्द्रिय विकल कहलाते हैं, क्योंकि संपूर्ण इन्द्रियां इन जीवों में नहीं है। पंचेन्द्रिय प्राणियों में मानव ही सर्वश्रेष्ठ है। पशुओं में भी पांच इन्द्रियां होती हैं किन्तु सोचने विचारने की क्षमता उनमें नहीं होती। मानव और पशु में यही अंतर है कि मानव ज्ञान संपन्न है। इसलिए मानव सर्वश्रेष्ठ है। मानव तन पाकर यदि मानव में मानवता का विकास न हो तो वह पशु से भी वदतर है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर एक दूसरे के सुख–दुःख से प्रभावित होना उसका धर्म है। यही कुछ ऐसी बातें हैं जो कि मानव को अन्य पंचेन्द्रिय प्राणियों से अलग करती हैं। मानव का सार है मनुष्यता, जो हर मनुष्य में पायी जाती है। इसे सुरक्षित रखना और सभी प्राणियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाये रखना मानव का परम कर्त्तव्य है। मानव एक

धर्मनिष्ठ प्राणी है। उसे अपने मन को शिव संकल्पों से युक्त करना चाहिए। धर्म इसी आवश्यकता का प्रतिपादन करने के लिए है। मन को सत्यम् से, वाणी को शिवम् से और चरित्र को सुन्दरम् से युक्त करने का उपक्रम है धर्म। मनुष्यता ही मानव को सर्वोच्च स्थान प्रदान करती है तथा मानव प्रकृति के उस पक्ष पर बल देती है जो प्रेम, मैत्री, दया सहयोग के रूप में अभिव्यक्त होती है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की संवेदना व दया, करुणा का भाव समस्त सृष्टि के जीवधारियों के लिए होता है। अतः अहिंसा इस दर्शन की प्रतिष्ठा के लिए सबसे अनिवार्य शर्त है। मानव जीवन में कर्म को पूर्ण महत्व दिया गया है और यह स्वीकार किया गया है कि मानव की श्रेष्ठता का आधार, विकास का आधार जन्म लेने मात्र से नही अपितु कर्म पर आधारित है। कर्म ही मनुष्य को ऊंचा या नीचा बनाता है।